P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-3* June- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की हिन्दी व्याकरणिक दक्षता का अध्ययन

जगदीश चन्द्र आमेटा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय,
सी.टी.ई., उदयपुर

सारांश

परिमार्जित भाषा हेतु व्याकरण अनिवार्य है। व्याकरण के बिना भाषा की स्थिति विशिष्ट से विचित्र होने लगती है। यदि कोई विद्यार्थी भाषा के नियमों-उपनियमों की परवाह किए बिना इसे व्यवहृत करता है तो उसकी स्थिति भी हास्यस्पद बन जाती है। विद्यार्थियों हेतु भी व्याकरण ज्ञान अपरिहार्य है। व्याकरण बोध से आत्म-विश्वास की अभिवृद्धि के साथ-साथ राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी भावात्मक एकता प्रतिस्थापित होती है। ऐसा भाषा के एक समान अनुप्रयोग से सम्भव होता है।

हमारे विद्यालयों के विद्यार्थियों और भावी नागरिकों के समक्ष व्याकरण का यक्ष प्रश्न उपस्थित है। हिन्दी व्याकरण का ज्ञान न केवल प्रतिष्ठा का प्रश्न है, अपितु कर्त्तव्य और दायित्व निर्वहन में अनिवार्य शर्त भी है। स्वयं को दक्षता की कसौटी पर परखे बिना विद्यार्थी स्वयं के साथ न्याय नहीं कर पायेंगे। शोधकर्त्ता ने विद्यार्थियों के मानस-पटल पर यही प्रश्न चिह्न अंकित करने का लघु प्रयास किया है कि क्या वे व्याकरणिक दक्षता रखते हैं ? यदि छात्र और छात्राओं की व्याकरण दक्षता पर प्रश्न चिह्न लगता है तो वे उसे पूर्णविराम और सकारात्मक विस्मयादिबोधक चिह्न में बदलेंगे तो ही शोधकर्त्ता का यह विनम्र प्रयास सफल कहलाएगा।

मुख्य शब्द : माध्यमिक स्तर, व्याकरण

प्रस्तावना

विचारों और भावों के सम्प्रेषण और अधिगम में सरलता, सहजता, सरसता, स्वाभाविकता और सौम्य भाषा द्वारा ही संभव है। भाषा के बिना संवाद की कल्पना हास्य का विषय लगती है। मुक रहकर भी हम अपनी बात सम्प्रेषित करने का प्रयास तो कर सकते हैं; किन्तु उसकी अधिगम प्रभावोत्पादकता पर निस्सन्देह संशय बना रहता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि भावों और विचारों के विनिमय का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संसाधन भाषा ही है।

किसी भी भाषा को लिखित रूप देने के लिए चिह्न निश्चित किये जाते हैं। मानव-आनन से निकलने वाली ध्वनियों के लिए प्रत्येक भाषा के अपने-अपने चिह्न होते हैं। ध्वनियों को चिह्नों में लिखने की विधि को ही लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। हिन्दी और संस्कृत भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

भाषा और व्याकरण में चोली-दामन का साथ है। हमारे प्राचीन वैयाकरणों में पाणिनी ने तो व्याकरण को भाषा का तृतीय नेत्र कहा है।भाषा सतत् प्रवहमान है। व्याकरण भाषा के प्रवाह को एक बिन्दु पर रोककर स्थिर करने के लिए बनाया गया बाँध है। वैयाकरण भाषा की प्रकृति के विरूद्ध जाकर बाँध-निर्माता बनने का दुस्साहस मात्र इसलिए करता है कि भाषा में बहुक्षेत्रीय संरचनात्मक एकरूपता बनी रहे। ऐसे सारे वैयाकरण इस दृष्टि से साधुवाद के पात्र हैं। शोधकर्त्ता ने अपने इस शोध में व्याकरणाचार्यों द्वारा आलोकित इस पारम्परिक पथ पर अनुकरण करने का एक लघु प्रयास किया है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की हिन्दी व्याकरणिक दक्षता का अध्ययन।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नांकित उद्देश्य हैं –

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी व्याकरिणक दक्षता का पता लगाना।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-3* June- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

2. माध्यमिक स्तर की छात्राओं की हिन्दी व्याकरणिक दक्षता का पता लगाना।
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी व्याकरणिक दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

टांक,रमेश चन्द्र (2001), माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की कक्षा 9 व 10 की संस्कृत का समीक्षात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर।

पटेल, अल्पा एस. (2005) ईडर तहसील के माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिन्दी पाठ्यचर्या के प्रति अभिवृति एवं अधिगम कठिनाइयों का अध्ययन।

मीणा, काझाराम (2013) एनसीएफ 2005 के सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर।

(प्रस्तुत कार्य शोधार्थी का मौलिक कार्य है। इस विषय पर अभी तक शोधार्थी की अधिकतम जानकारी के अनुसार कोई कार्य नहीं हुआ है।)

न्यादर्श चयन

पारिभाषिक शब्द

समस्या कथन *'माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की हिन्दी व्याकरणिक दक्षता का अध्ययन'* की पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत है–

माध्यमिक स्तर

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर का आशय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से सम्बद्ध दसवीं कक्षा से है।

व्याकरणिक

इसका विग्रह है – वि+आ+करण+इक। समग्र रूप में, व्याकरण का अर्थ है – वह विद्या जिसके अन्तर्गत भाषा के स्वरूप, गठन, अवयव और रचना–विधान आदि का विवेचन किया जाता है। इस तरह व्याकरणिक का अर्थ होगा – व्याकरण से सम्बन्धित।

दक्षता

इसका अर्थ कुशलता–निपुणता से है।

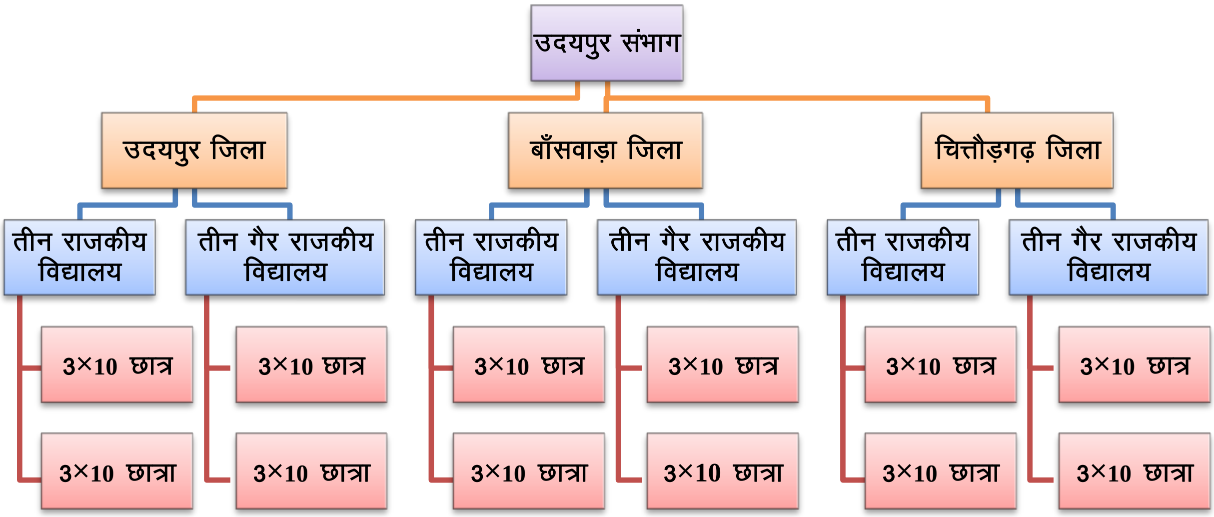

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया गया है। जिस शोधकार्य का उद्देश्य तात्कालिक परिस्थितियों का अध्ययन और उसकी व्याख्या करना होता है, उसके लिए 'सर्वेक्षण विधि' उपयुक्त रहती है। इसी तथ्य को केन्द्र में रखकर उपर्युक्त विधि का चयन किया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं होने से स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का अनुप्रयोग करना निश्चय किया गया। इस उपकरण को अनुप्रयोग से पूर्व विशेषज्ञों के परामर्शानुसार मानकीकृत करना भी निश्चय किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

इस समस्या-अध्ययन में दत्तों का विश्लेषण करने के लिए निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का चयन किया गया है :–

1. मध्यमान।
2. मानक विचलन।
3. 't' परीक्षण।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-3* June- 2018

E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

समग्र विश्लेषण

माध्यमिक स्तर पर छात्रऔरछात्राओं की कुल व्याकरणिक दक्षता की तुलनात्मक स्थिति

	छात्र (Boys)	छात्राएँ (Girls)
मध्यमान	38.622	40.894
मानक विचलन	15.579	17.938
N	180	180
मध्यमान अन्तर	2.272	
t	1.283	
सार्थक / असार्थक	N.S.	

{df = 358, t tab. = 1.97 (0.05); 2.59 (0.01)}

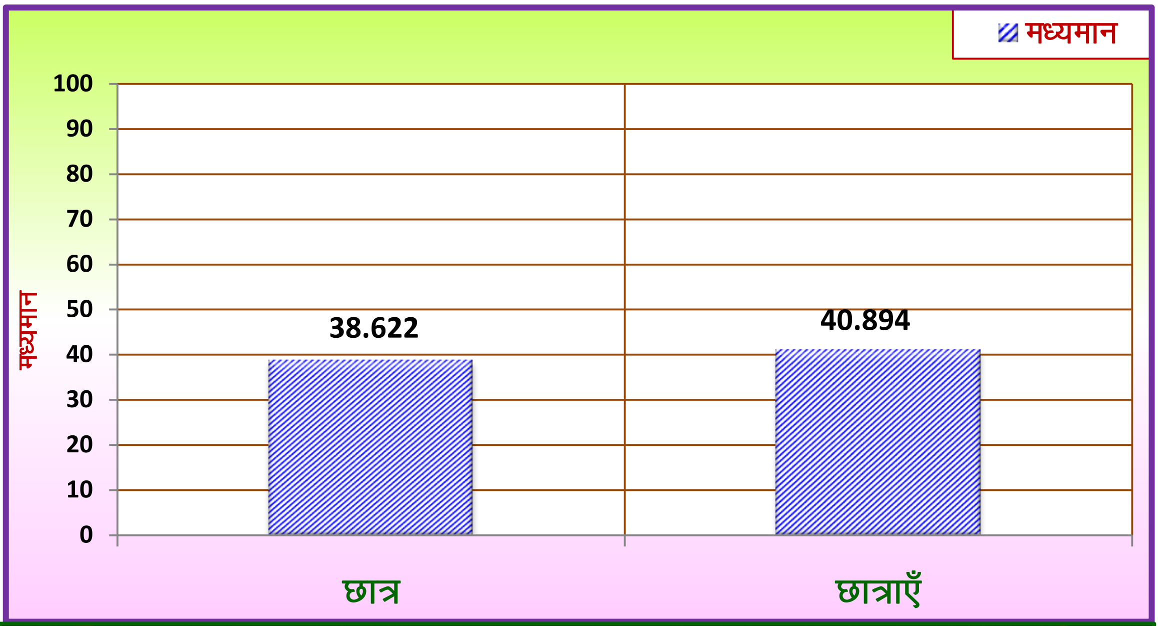

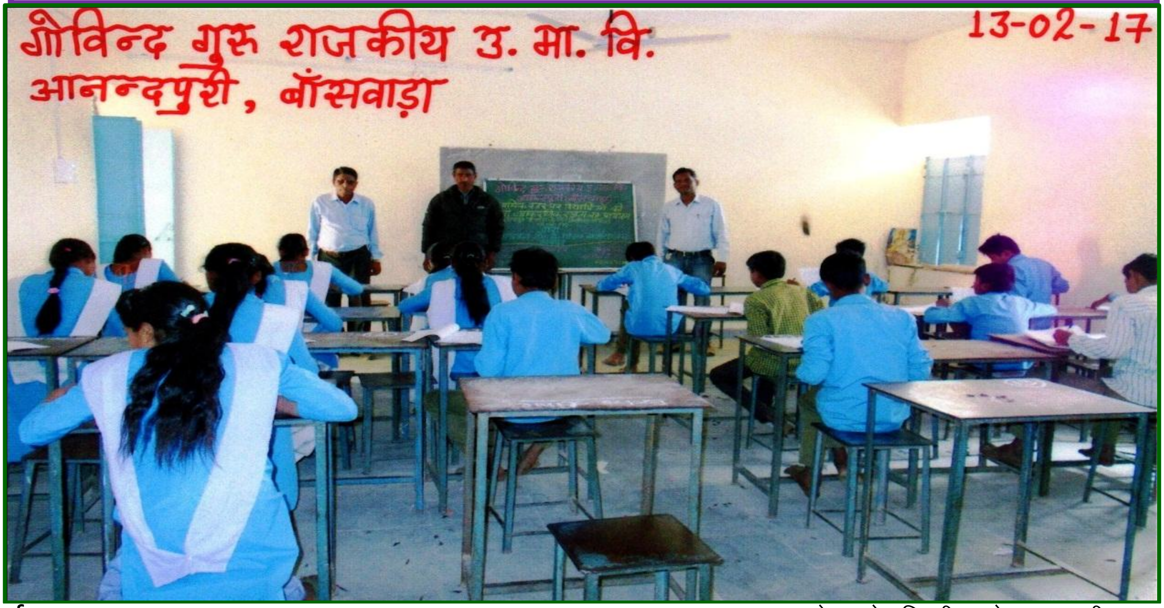

निष्कर्ष

वर्तमान युग में विद्यार्थी की भूमिका क्रमशः और अधिक चुनौतीपूर्ण बनती जा रही है। उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताएँ और साथ-साथ तेजी से बदलते सामाजिक परिदृश्य ने उनके दायित्व को कठिन से कठिनतर कर दिया है। ऐसे में विद्यार्थी को अपना ज्ञान-कौशल अद्यतन बनाये रखना बेहद अनिवार्य है। जहाँ तक हिन्दी भाषा की बात है, उनकी व्याकरणिक दक्षता अपरिहार्य है।

प्रस्तुत शोध से किसी बड़े सामान्यीकरण की बात तो नहीं की जा सकती है; लेकिन प्राथमिक तौर पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की व्याकरण दक्षता बढ़ाना अनिवार्य है। प्रस्तुत शोध के आधार पर प्रथम दृष्टया इतना तो कहा ही जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के वर्तमान छात्र और छात्राओं की व्याकरणिक दक्षता का स्तर न्यून है। इनका स्तर कैसे बढ़ाया जाए, यह शैक्षिक समाज के समक्ष एक चिंतनीय प्रश्न है।

माध्यमिक स्तर के स्वयं छात्र-छात्राओं की स्वैच्छिक सजगता, उनके शिक्षकों की कर्त्तव्यपरायणता और शिक्षा-विशेषज्ञों द्वारा पाठ्यक्रम में वांछित आमूल-चूल परिवर्तन इस प्रश्न के प्रधान संभावित उत्तर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कुमार, डॉ. अरविन्द (2012), सम्पूर्ण हिन्दी व्याकरण और रचना, पटना। लूसेंट पब्लिकेशन।*
2. *जोशी, डॉ. ब्रजरतन (2010), हिन्दी व्याकरण सार, जयपुर। पत्रिका प्रकाशन।*
3. *ढौंडियाल, सच्चिदानन्द एवं अरविन्द फाटक (पुनर्संस्करण, 2003), शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
4. *नागर, कैलाश नाथ (1993), सांख्यिकी के मूल तत्त्व, मेरठ। मीनाक्षी प्रकाशन।*
5. *'भावी', रतन लाल गोयल एवं डॉ. भगवती लाल व्यास (2003),नवीन हिन्दी व्याकरण एवं रचना, अजमेर।अल्का पब्लिकेशंस।*
6. *मंगल, डॉ. अंशु एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2011), शैक्षिक अनुसन्धान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, आगरा।राधा प्रकाशन मंन्दिर प्रा. लि.।*
7. *शर्मा, महेश प्रसाद (2007), हिन्दी प्रभा व्याकरण एवं रचना, मथुरा। मीतल पब्लिशिंग हाऊस।*
8. *सक्सैना एन.आर. एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2003), अध्यापक शिक्षा, मेरठ।सूर्या पब्लिकेशन।*